ये कविता कविता नहीं

ये कविता कविता नहीं
मेरे जीवन की
छटपटाहट है
ये कविता कविता नहीं
मेरे सपनों के प्रस्फुटित
अंकुर हैं
ये कविता कविता नहीं
मेरी माटी की
सुगंध है
ये कविता कविता नहीं
मेरे आकाश की
रोशनी है
ये कविता कविता नहीं
मेरे अंदर बहती
स्नेह की नदी है .

-दुर्गाप्रसाद झाला

सावन मधुमास

सावन ! मधुमास !!
मेघों से ढका आकाश,
दौड़ती भागती पुरवाई,
मचलती बिफरती
सांवरी घटा,
बीजुरी की चकाचौंध,
मेघों का अट्टहास
घर्षण और गर्जन,
कहीं घोर वर्षण,
प्यासी अवनि को
टप-टप कर,
जल अर्पण,
कहीं रेरे,
कहीं वृष्टि
कहीं लगती झड़ियां,
सावन ! मधुमास !!
मेघों से ढका आकाश ।
दौड़ते बादल,
गरजते बादल,
मचलते और
बरसते बादल,
उफनती नदियां,
लबालब समन्दर,
इन्दर की मर्जी का
ये कैसा है मंजर ?
दादुर की टर्र-टर्र
झींगुर की झपताल,
कोयल की कूंक पर
जियरा बेहाल
सावन मधुमास !
मेघों से ढका आकाश !!
फूल खिले गुलशन-गुलशन
तितली-भंवरे मचले,
अमराई में झूले पड़गये
सजना संग सखियां झूले
बगियां महके,
चिड़ियां चहके
पल-पल मनवा डोले
सावन ! मधुमास !!

प्रफुल्ल त्रिवेदी (इंदौर,) 99778-66527

नाम बिकता है

इस प्रचार-प्रधान जग में
उत्कृष्टता नहीं,
केवल नाम बिकता है।
क्योंकि गुण तो भीतर होते हैं,
ऊपर बस नाम दिखता है।
तभी तो बड़ी मछली
सदा छोटी को निगलती है।
थोथा चना शोर मचाता,
प्रतिभा मौन चमकती है।
कला हो या साहित्य,
समाज हो या देश का दायित्व–
हर ओर नाम का
बोलबाला है।
सीधे-सादे इंसान को
सबने मिलकर
सदा कोने में ही डाला है।
रिश्तेदारों और समाज ने
नाम को सिर चढ़ाया है।
बड़े नाम को आगे करके
और आगे बढ़ाया है।
नाम चाहे ओहदों का हो,
डिग्रियों का हो,
पुस्तकों का हो या लेखकों का,
पदों का हो या पेशों का–
हर ओर यही व्यापार दिखता है।
नाम... नाम... बस नाम बिकता है,
गुण अक्सर गुमनाम ही रहता है।
नाम के आगे छोटा-बड़ा,
हर कोई अदब से झुकता है।

कुसुम अग्रवाल कांकरोली, (राजसमंद) - 313324

नशे में तो नाश होता है।

नशे से ही उपहास होता है।
नशे में तो नशेड़ी ही नहीं,
सारा ही परिवार रोता है।
नशे में खुद ज्ञान खोता है,
नशे में खुद मान खोता है।
नशेड़ी फूट फूट के रोता है ,
कभी तो बेबात ही हँसता है।
कभी कही वह बहकता है,
बिना काम के ही झगड़ता है ।
कही राह बिच ही गीरता है,
कहीं पे नाली में ढुलकता है।
किसी से टकरा के मरता है,
कभी नशे के रोग से मरता हैं।
राही तुमसे ये विनती करता है,
कभी ना तुम इसे अपनाओ।
अपनी संस्कृति तुम बचाओ,
पूरा नशा मुक्त भारत बनाओ ।

महेश गुप्ता 'राही ' गुजरी चौक,राजपुर(बड़वानी) मोबाइल नं०9424056432

पाबंदियाँ

सज्दा मुकम्मल होता है दिल झुकने पे।।
गोया, दुआएँ क़बूल होती हैं वजूद मिटाने पे।
देखना कभी अपनों से दूरी करके।
बहुत याद आता है रूठ जाने पे।।
तरसता रहा जून का महीना भी।
बरसना हमें था किसी के आने पे।।
इसलिए भी पाबंदियाँ हैं यार की मातम में।
मंजर बदल जाता है उसके मुस्कुराने पे।।
बँटवारा दौलत का है सौदा रिश्तों का।
फ़ासला आ ही जाता है हक़ जताने पे।।
पिघल जाता है खुद ही 'अक्स' महबूब का।
पाबंदी लगे उनके सजने सजाने पे।।

नितिन पुरोहित अक्स उज्जैन

जिन्दगी भर प्रेम के गीत गाता रहा

जिन्दगी भर प्रेम के गीत गाता रहा,
संग मेरे सदा कोई गुनगुनाता रहा।
मैंने उसके घरों में उजाला किया,
मेरे घर का दीया जो बुझाता रहा।
सुबह होने पर मुझको ऐसा लगा,
रात भर कोई मुझको बुलाता रहा।
डोली आँगन में मेरे ना आई कोई,
उम्र भर बस मैं डोली सजाता रहा।
यादें जिसकी मुझे रुलाती है आज तक,
जिंदगी भर वह शख्स मुस्कुराता रहा।
मिलने पर भी जो अब पहचानते नहीं,
जिनके सपनों में कभी मैं था आता रहा।
ख्वाब बिखरते रहे और मैं बुनता गया,
वक्त की मार हँस-हँस के खाता रहा।
ये मेरा हौसला था कि उफ़ तक न की,
और जिन्दगी भर सदा मुस्कुराता रहा।
जिन्दगी भर प्रेम के गीत गाता रहा,
संग मेरे सदा कोई गुनगुनाता रहा।

डा. सारिका मुकेश (तमिलनाडु)

आँसू

ग़म में बहे या
खुशियों से झलके।
आँसू अपना स्वाद
कभी नहीं बदलते
सदा ही होते हैं नमकीन।
आंखों के प्याले में
सिमटकर रहतीं हैं
इसकी बूंदें
कभी कभी छलकने से
बचा लेती हैं इसे, आंखें
अपनी पलकें मूंदे
कभी होता हैं
खुशियों से नम
तो कभी ग़म से गमगीन
लेकिन, होते हैं
सदा ही नमकीन।
तीखी चीज का स्वाद
बताने ,,टप टप टपके आंसू
कड़वी बातों ,,को चख कर भी
झर झर बहते आंसू।
दिल अगर परेशां हो तो
बहते
रात और दिन
लेकिन अपना स्वाद ना बदले
लगते हैं नमकीन।

अमृता राजेंद्रप्रसाद जगदलपुर छत्तीसगढ़

अनुराग

मीठी बोली से सदा,
बन जाते सब काज,
सदा मधुरता से बजे,
खुशियों वाले साज,
खुशियों वाले साज,
प्रीत के ढोल बजेंगे,
सब खुश होंगे मीत,
महफिलें खूब सजेंगे,
बातों में अनुराग,
प्रीत से जिसने घोली,
बनते सारे काज,
अगर हो मीठी बोली।

महेंद्र कुमार वर्मा भोपाल मो -- 9893836328

पागल प्रिया दिवानी

व्यर्थ हो गई भौतिक सज्जा और सारे शृंगार,
वर्षा रानी दिल को जलाने मत आना मेरे द्वार।
जिनको तन-मन अर्पन करके भूल गई थी दुनिया
गुड्डे गुड़िया खेल खिलौने वाली अल्हड़ मुनिया
चूंदर चूड़ी मन नहीं भावे नहीं सोलह शृंगार,
वर्षा रानी दिल को जलाने मत आना मेरे द्वार।
गीत मिलन के नहीं सुहाते हुए पिया परदेशी
देश- प्रेम में हुए समर्पित मुझे किया दरवेशी
आशाओं के तार पिरोती खोले मन के द्वार
वर्षा रानी दिल को जलाने मत आना मेरे द्वार।
बैठी आँगन पंथ निहारूँ आँखिन बरसे मेघ
काया मेरी श्याम हो गई भुला दिया सब नेह
पायल बिछुआ रंग महावर रो-रो करें पुकार
वर्षा रानी दिल को जलाने मत आना मेरे द्वार।
धूप-छांव सा भाग्य हमारा तू बादल की रानी
रति के रंग महल सब सूने पागल प्रिया दिवानी
ऋतुओं के संग बदल गया है प्रीतम तेरा प्यार।
वर्षा रानी दिल को जलाने मत आना मेरे द्वार।

ब्रह्मेश्वर नाथ मिश्र आरा, भोजपुर, बिहार

अज्ञान का माया

उत्पत्ति विनाश शिल ,सभी जीव जगत।
परमेश्वर प्रभु के योग माया जनित है।
जो अज्ञान के कारण साधारण जनकी।
ज्ञान रहित जन को,सही सत्य लगता है।?1।।
जैसे सुर्य सदैव रहता है।
आवरण बादल में छुपने पर।
अदृश्य लगने लगता है।
और बादल छंटने पर ,प्रकट रहता है।।2।।
ठीक इसी प्रकार यह क्षणभंगुर संसार है।
जो हमें सुखमय लगता है,पर दुखों का घर है।।3।।
'इति'

करमचंद कौशिक 'योग लेखक' महर्षि आश्रम खंडवा (म.प्र.)450001, मोबाइल नंबर 9754051951,

गीत

शैलजा छंद में
तेरी यादों का है आना,हर दिन जारी।
बैचेनी अब औढै रहती, दिल की क्यारी।।
तेरे बिन मेरे दिल का भी,आँगन रोया।
दिल ने तेरा प्यार भरा जो,सावन खोया।।
मेरे दिल से ग़म की निकली,यार सवारी।
बैचेनी अब औढै रहती, दिल की क्यारी।।
मेरे दिल ने अब पतझर से, जोड़ा नाता।
दिल का मधुबन गीत विरह के, मेरा गाता।।
चली विरह की दिल पर मेरे, यारों आरी।।
बैचेनी अब औढै रहती, दिल की क्यारी।।
मेरा दिल का मधुबन तुमको, सदा पुकारे।
काश मिले फिर अब चाहत के, मुझे सहारे।।
छूटी चाहत की तेरी जो, मुझसे यारी।
बैचेनी अब औढै रहती, दिल की क्यारी।।

सुनील गौर इंदौर

करिएँ अकड़ का अंत...

शब्दों के तीर चलाना बहुत है आसान,
परंतु यह बोझ उठाना कठिन होता है।
लेकिन 'क्षणिक आवेश' की आँधी में,
अक्सर विवेक कहीं खो सा जाता है।
यहाँ भीड़ के शोर में जो बहकर जाते,
वे भी सच का स्वर पहचान नहीं पाते।
जब आई 'आत्मा' की असली दस्तक,
तभी तो पश्चाताप के आँसू झर जाते।
कारण, हमेशा झुकना हार नहीं होता,
गलती मानना 'साहस' की पहचान है।
जो समय रहते हुए स्वयं को बदल ले,
आज वह दुनिया में 'सच्चा इंसान' है।
कटु वाणी से सिर्फ 'दूरियाँ' ही बढ़ती,
यूं जहाँ संयम से सम्मान जन्म लेता है।
जेन जी का यहीं सबसे बड़ा आभूषण,
विनम्र आचरण और सदबुद्धि होता है।
आओ सीख लें इस जीवन के पाठ को,
किसी पे क्रोध नहीं, संवाद को अपनाएँ।
दिलों में मतभेद रहें तब भी मर्यादा रहे,
हिंदुस्तान की संस्कृति का मान बढ़ाएँ।

संजय एम तराणेकर इन्दौर-मो. 98260 25986

जयभारत

जयभारत से हिंदुस्तान गूंजता है,
माटी की खुशबू से देश महकता है
वीरों की शौर्य गाथा को जवान सुनता है,
जय भारत से सारा जहां गूंजता है

इसका गौरव ,सम्मान हमारी पहचान है,
इसकी शान की खातिर वीर जान देता है
तिरंगे की खातिर बलिदान होता है,
गंगा से पावन इसकी याद दिलाता है

विविधता में एकता का संदेश देता है,
हर दिल में भारत का दिल बसता है
देश मेहनत से सब ओर खिलता है,
हर संकट को दूर करता यह मान बढ़ाता है

डॉ पूनम गुप्ता भोपाल (मध्यप्रदेश)

शिव बियाहन अइलें हो

सखी हो बसहा पर हो के सवार हो ,
शिव बियाहन अइलें हो ।
सखी हो जटवा में गंगा जी के धार हो ,
शिव बियाहन अइलें हो ।
सखी हो बसहा पर.....
सँपि के कुंडल साँपहिं गले माला ,
सँपि के शोभे सिर मौर हो ,
शिव बियाहन अइलें हो ।
सखी हो बसहा पर.....
अंग भभूति कटी बाघम्बर ,
शोभेला चन्द्र लिलार हो ,
शिव बियाहन अइलें हो ।
सखी हो बसहा पर.....
भुत बैताल पिशाच पिशाचिन ,
नाचेलें देइ देइ ताल हो ,
शिव बियाहन अइलें हो ।
सखी हो बसहा पर.....

ब्रह्मेश्वर नाथ मिश्र आरा, भोजपुर, बिहार

बूढ़ा बैल कहीं नहीं बिकता

ये सोचकर
बैल खरीदे
किसान ने
अपनी पहली
फसल बेचकर
घर को एक बारिश
और खाने दे
बाद में ठीक करायेंगे
बैलो के खूरों में
नाल लगवाने का
दर्द ,मगर खुद के सीने में
दबा जाते है
हर साल फसलों का
जोड़ बाकी करके
फसलो पर दंभ भरते
वे फसले जिनका
खाद ,दवाई बीज
पहले उधारी का
निवाला बन चुकी
पानी ने अतिवृष्टि में
फसले कमजोर कर
फसलों के लाभ के आँकड़े
बदल डाले ऋणों में
ये बातें भला बैल क्या जाने ?
कर्ज में डूबा किसान
बैलो को ही सुख -दु:ख का
सहारा समझता
उनसे ही बातें करता
अपने दु:ख दर्दों को
बीमार होने पर
छकड़ा गाड़ी में
बैलो जोतकर
इलाज करवाने चला जाता है
शहर
बैलगाड़ी की लचरता
उसके पहिये के
टूट जाने से होती
बेबस
इसमें भला बैल का क्या दोष ?
बैल ही को
किसान मारता ,समझाता
इसी ने मेरी गाड़ी तोड़ी
घर जाने पर गुस्सा
छोड़ आता रास्ते पर
दुलारता है फिर से
बैलो को
बैल बूढ़ा होने तक
अपने मालिक की सेवा
करता है
क्योंकि अंत में उसे
किसान के घर ही
मरना है
क्योंकि बूढ़ा बैल कहीं बिकता नहीं
इसमें भला किसान का क्या दोष ?

संजय वर्मा 'दृष्टि ' 125 , बलिदानी भगत सिंह मार्ग मनावर जिला -धार (म प्र)

गुरु एक पूर्ण अवसर
जीवन की गणना का आधार
बुद्धि को देते आकार
नव सृजन का करते संचार
मूलबंध को तोड़ कर
ज्ञान ध्यान की नदी बहाते
जीवन रूपी सागर मे
मोती चुनना सिखलाते
गुरू ज्ञान की गंगा है
गुरू ध्यान का सागर है
राम कृष्ण ने गुरू को पाया
जीवन को एक ध्येय बनाया
अर्जुन ने गीता को पाया
गुरु की महिमा कोई न जाने
गुरू ने ईश्वर को बनाया

ज्योति उपाध्याय

बेटी ने कहा पापा,

दादी का फोन आया है।
दवाई को पैसा मंगाया है।
बेटी जरा धीरे बोल,
मन की आँखें खोल।
तेरी माँ ने सुन लिया तो,
मोर्चा तन जाइगा,
मेरी माँ का जीते जी,
मातम मन जाइगा।।
(2) बंटी ने सहमते हुए कहा,
माम कल गाँव चलेंगे।
दादा-दादी से मिलेंगे।
माँ ने कान ऐंठते हुए कहा,
तू अजीवो गरीब बात कहता,
कुछ अपनी ही धुन में रहता है,
समझ गई नाली का कीड़ा,
नाली में हीं राजी रहता है।
(3) तनहाई ने मंदिर से,
नाता जोड़ लिया है।
बुढ़ापे ने बीरान बस्ती में,
दम तोड़ दिया है।
पड़ोसी गाली देते-देते हैरान हैं,
कौन सा बेटा कहाँ रहता है ?
फोन नम्बर को परेशान हैं।
दूसरे दिन बेटों ने ड्रांइग रूम में,
तस्वीर सजाई है,
बहुओं ने अगरबत्ती और
माला चढ़ाई है।
जिंदे लाचार बाप की
लाचारी को दुत्कार,
मरने के बाद दिखावा,
तस्वीरों से प्यार
ऐसे नकली चेहरों को,
धिक्कार है धिक्कार।

देवीप्रसाद गौड़ बी-50 मोती कुंज एक्सटेंशन मथुरा

मन के जज्बात

मन के जज्बात
जब मन में ही रह जाते हैं,
तो क्या कह देने भर से
वे सचमुच हल हो जाते हैं?
लोगों ने कहा–
किसी से अपने मन की बात कहो,
मन हल्का हो जाएगा।
पर क्या
हर सुनने वाला
समझ भी पाता है?
कई बार
सामने बैठा इंसान भी
अपनी ही उलझनों में घिरा होता है।
उसके कमरे का
आधा खुला दरवाजा,
हल्की हवा में हिलता पर्दा,
और मेज पर रखा
ठंडी हो चुकी चाय का गिलास–
शायद उसकी कहानी
उससे पहले कह देते हों।
उसके हिस्से की चुप्पियाँ भी
कम नहीं होतीं।
फिर दो उलझे हुए लोग
एक-दूसरे की गाँठें
कैसे खोलेंगे?
मैंने भी
कई बार कोशिश की।
कुछ बातें
होंठों तक आकर लौट गईं,
कुछ कागजों पर उतर गईं।
तब जाना–
मेरी कलम
मेरी सबसे धैर्यवान श्रोता है।
वह कभी बीच में नहीं टोकती,
न ही मेरे शब्दों का अर्थ पूछती है।
बस चुपचाप
हर अधूरी बात को
अपने भीतर रख लेती है
पर जो लिख नहीं सकते,
उनका क्या?
क्या उन्हें भी
कोई ऐसा किनारा मिलता होगा,
जहाँ बिना बोले ही
उन्हें समझा लिया जाता हो?
क्या कभी
वे अपनी अधूरी कहानियाँ
किनारे की रेत पर लिखते होंगे?
और फिर
समुद्र की एक लहर
उन्हें धीरे से मिटा देती होगी।
वे देर तक
उसी मिटती हुई लिखावट को
देखते रहते होंगे।
शायद
कुछ आँसू
बारिश बनकर बह जाते होंगे,
और कुछ
मन की मिट्टी में
चुपचाप दबे रह जाते होंगे।
कभी
किसी किताब के किसी किरदार में
अपना ही चेहरा खोजते होंगे।
और जब
कहीं भी उत्तर नहीं मिलता होगा,
तो शायद...
एक और दिन
उसी मुस्कुराते चेहरे के साथ
दुनिया के बीच लौट जाते होंगे,
और अपना सबसे बड़ा दर्द
फिर से
अपने ही भीतर रख लेते होंगे।

अनुपमा आर्य आगरा उत्तर प्रदेश

दुख

दुख का क्या आती- जाती, रही बदलती गेह।
आज यहाँ कल वहाँ टिकाना, रही तड़पती देह।।
भरमाये कुछ ही घड़ी सदा ,रहती अपने संग।
हमें उम्र भर रही सिखाती, जीवन है बस जंग ।।
भूल न जाना सुन दीवाने, मिले पतित ज्यों स्नेह।
दुख का क्या आती- जाती, रही बदलती गेह ।।
बदल -बदल कर रूप चली है, नहीं एक पहचान।
पल- पल लेती रही परीक्षा, पास करो आज्ञान।।
आँधी में साहस मत खोना , चाहे बरसे मेह।
दुख का क्या आती- जाती, रही बदलती गेह।।
कोई एक किसी से खुश कब, झूठा भ्रम मत पाल।
दुख की बदली छँट जाएगी, स्वयं कष्ट को टाल।।
टूटे विश्वास यहाँ क्षण- क्षण, है पथ के सब रेह।
दुख का क्या आती- जाती, रही बदलती गेह।।

किरण कुमारी वर्तनी

बुंदे सागर होय

परमाणु अणु दशमलव बिंदु शुन्य।
जलाशय जल का जल बुंद ।
और उस जलाशय के जल बुंद में।
जल का गुण विद्यमान है।।1।।
इसको अंशी और अंश के उदाहरण से।
समझ और समझा सकते हैं।
जैसे अग्नि का एक गोला से।
उसके एक टुकड़े कम में भी ।
आग के जलाने के गुण मौजूद है।।2।। '

करमचंद कौशिक 'खंडवा मोबाइल नंबर 9754051951,

।। रेशमिया मीत ।।

सावन में धूप खिली है ।
रेशमिया मीत मिली है ।
कभी -
वह भींग जाती है ।
कभी -
वह सूख जाती है ।
सूरज के साथ पली है ।
रेशमिया मीत मिली है ।
कभी -
मेघ की बांहों में ।
कभी -
प्रीत की राहों में ।
साजन के गांव चली है ।
रेशमिया मीत मिली है ।
दिनभर -
आंख मिचौली कर ।
प्रेम फुहारों से -
मन हर ?।
तर हृदय को कर चली है ।
रेशमिया मीत मिली है ।
कभी -
दिन में कर अंधेरा ।
कभी -
दिनभर कर बसेरा ।
पानी से खूब जली है ।
रेशमिया मीत मिली है ।

अशोक आनन मक्सी

दो गफलतें

दो बातें,
दो विचार,
दो गले से आते हैं
दो भ्रम, सच और झूठ
दो गलियों से
दो राह पर निकल जाते हैं
दो लोग असमंजस में पड़
जाते हैं
अक्सर झूठ को सच-
सच को झूठ मान लेते हैं
दो कान कच्चे पक्के
सुनते कुछ समझते कुछ
दो बातें कुछ और कर जाते हैं
दो से चार और चार से गुनी
दो-चार और नई कह जाते हैं
दो घड़ी में ईंट-गारे से
दो गढ़ नए बन जाते हैं
दो महरत दो सियासत
दो शहर बस जाते हैं
एक से दो हो जाते हैं

सुरेंद्र बंसल

कविताएँ

(1)टुकड़ों में छनती धूप
छूने जाओ तो पकड़ में नहीं
आती
वसुंधरा पर पसरी
हवा के झोंकों से जगह
बदलती
सहसा आंगन से बाहर निकल
जाती
नहीं रोक पाते इस हलचल
को
बच्चे जब बड़े हो जाते
ऐसे ही जैसे आंगन में छनती
धूप।।।
(2)बारिश के मौसम में
खिड़की पर पड़ती बूंदों की
आवाज
थमने का नाम नहीं लेती
टप टप और टिक टिक
दोनों एक से लगते हैं
शाम के इस सन्नाटे में

(3)बालकनी में खड़ा होना
बहुमंजिली इमारतों में रहना
देखता हूं सामने का मैदानड्ड
रोज बौना हो रहा है।
सीमेंट के जंगल नुमा पेड़
और झाड़ियां
साल वनों की तरह घर रही हैं
पर नहीं है
उनमें वह सोंधापन-नमी
और कलरव सी जीवंतता।
सब जगह जड़ता का विस्तार
जो रुकता नजर नहीं आता।

वासुदेव उबेराय वाराणसी

बाल कविता

दुनिया गोल !
अठन्नी चवन्नी रुपया गोल
धरती सूरज चंदा गोल,
अंगूठी चूड़ी बिंदिया गोल
पहिया लट्टू कंचा गोल

गैंद गुब्बारा मोती गोल
तवा थाली चकला गोल,
पूरी पापड़ रोटी गोल
मटका छलनी तसला गोल

सेब मौसम्मी तरबूजा गोल
मटर नींबू टिंडा गोल,
लड्डू कचौड़ी रसगुल्ला गोल
गोली पेड़ा अंडा गोल

चकरी कोहलू चरखा गोल
भंवर कुआँ लुटिया गोल,
घुँघरू डफली तबला गोल
गुंबद संसद दुनिया गोल

विप्रम दिल्ली गाजियाबाद